गुप्त कलीसिया–9

मसीह की देह

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 6

वे शहरपनाह पर चलते हुए बार बार परमेश्वर को उसके उपकारों के लिए धन्यवाद देते थे। अतः हम एक दूसरे के साथ परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। अतः हम आराधना में सामूहिक उत्सव मनाते हैं।

हम एक दूसरे के साथ सहभागी होते हैं– नहेम्याह 12:31–37, "तब मैं ने यहूदी हाकिमों को शहरपनाह पर चढ़ाकर दो बड़े दल ठहराए, जो धन्यवाद करते हुए धूमधाम के साथ चलते थे। इनमें से एक दल तो दक्षिण की ओर, अर्थात् कूड़ाफाटक की ओर शहरपनाह के ऊपर ऊपर से चला; और उसके पीछे पीछे ये चले, अर्थात् होशयाह, और यहूदा के आधे हाकिम, और अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम, यहूदा, बिन्यामीन, शमायाह, और यिर्मयाह, और याजकों के कितने पुत्र तुरहियां लिये हुएः अर्थात् जकर्याह जो योहानान का पुत्र था, यह शमायाह का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र, यह मीकायाह का पुत्र, यह जक्कूर का पुत्र, यह आसाप का पुत्र था; और उसके भाई शमायाह, अजरेल, मिललै, गिललै, माऐ, नतनेल, यहूदा और हनानी परमेश्वर के भक्त दाऊद के बाजे लिये हुए थे; और उनके आगे आगे एज्रा शास्त्री चला। ये सोताफाटक से हो सीधे दाऊदपुर की सीढ़ी पर चढ़, शहरपनाह की ऊंचाई पर से चलकर, दाऊद के भवन के ऊपर से होकर, पूरब की ओर जलफाटक तक पहुंचे।"

वहां असंख्य स्त्री–पुरुष और बच्चे हैं। आराधना में हम व्यक्तिगत शैली से बचते हैं। यहां नाम तो दिए गए हैं परन्तु वे एकजुट एकत्र हैं। आप ऐसा न करें कि खड़े होकर ऐसा व्यवहार करें कि आप ही हैं और कोई नहीं है। आराधना में हम एक उद्देश्य के निमित्त एकत्र होते हैं। आपके पास बैठा मनुष्य क्या सोचता है? "मैं ऐसा व्यवहार करता हूं कि मैं यहां नहीं हूं और आप ऐसा व्यवहार करो कि आप भी यहां नहीं हैं।" नहीं, ऐसा न करें। हम एक समुदाय हैं। हम दर्शक नहीं हैं। हम तो आराधनालय भी ऐसे बनाते हैं जिसमें आराधकों को दर्शकगण समझ कर रचना की जाती है। हम एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं। आप नहेम्याह 12 के जनसमूह में सहभागी होने की कल्पना करें!

कुलुस्सियों 3:16–17, "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और

स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। वचन में या काम में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।"

इफिसियों 5:17–21, "इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है। दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने–अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो।"

1 कुरिन्थियों 14:15–16, "अतः क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा। नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन कैसे कहेगा? क्योंकि वह तो नहीं जानता कि तू क्या कहता है?"

पौलुस कहता है, "प्रभु के कार्यों का ऊंची आवाज़ में वर्णन करें परन्तु इस प्रकार की समझ में आए। धन्यवाद दें कि सहभागी "आमीन" कहे। संपूर्ण कलीसिया में आमीन कहने को यह बाइबल आधारित परिदृश्य है। अतः हम बाइबल पर चलें! हम एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं।"

हम अपनी एकता प्रकट करते हैं। मैं यहां नहेम्याह अध्याय 8:1 से कुछ व्यक्त करना चाहता हूं, "जब सातवां महीना निकट आया, उस समय सब इस्राएली अपने अपने नगर में थे। तब उन सब लोगों ने एक मन होकर, जलफाटक के सामने के चौक में इकट्ठे होकर, एज्रा शास्त्री से कहा कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले आ।"

वे सब एक होकर एकत्र हुए और उनके मध्य व्यवस्था अर्थात परमेश्वर का वचन था। नहेम्याह अध्याय 12 इसकी अभिव्यक्ति है। यदि हम सावधान न रहें तो हम एकता लानेवाले अन्य साधनों की खोज करेंगे। और यदि हमें अपनी पसन्द के भजन तथा संगीत सुनाई न दें तो कलीसिया की एकता भंग होने लगती है। हमारी आराधना हमें एकता प्रदान नहीं करती संगीत हमें एकता प्रदान नहीं करता तो हम खिन्न हो जाते हैं। हम संगीत से सुसमाचार के काम की आशा करते हैं। सुसमाचार हम में एकता लाता है आराधना हमारी एकता प्रकट करती है। विधियां एकता नहीं लाती हैं। एकता हम लाते हैं।

हम संपूर्ण इतिहास में कलीसिया की एकता बनाते हैं।

नहेम्याह 12:45–46, "इसलिये वे अपने परमेश्वर के काम और शुद्धता के विषय चौकसी करते रहे; और गवैये और द्वारपाल भी दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान की आज्ञा के अनुसार वैसा ही करते रहे। प्राचीनकाल, अर्थात् दाऊद और आसाप के दिनों में तो गवैयों के प्रधान थे, और परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद के गीत गाए जाते थे।"

वे पूर्वकालिक घटनाओं के कारण आराधना कर रहे थे। हमें अपने पूर्वकाल के भाई बहनों द्वारा की गई आराधना को तुच्छ नहीं समझना है। पूर्वकालिक कलीसिया के साथ भी एकता बनाए रखने से हमें नहीं चूकना है।

अन्त में, हम आत्मिक युद्ध में सहभागी हैं। वे शहरपनाह पर एक साथ चल रहे थे। यदि आप 2 इतिहास अध्याय 20 देखें तो वहां यहोशापात युद्ध में जा रहा है और उसकी गायन मंडली आगे चल रही है।

2 इतिहास 20:20–22, "वे सवेरे उठकर तकोआ के जंगल की ओर निकल गए; और चलते समय यहोशापात ने खड़े होकर कहा, "हे यहूदियो, हे यरूशलेम के निवासियो, मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे; उसके नबियों की प्रतीति करो, तब तुम कृतार्थ हो जाओगे।" तब उसने प्रजा के साथ सम्मति करके कितनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान होकर हथियारबन्दों के आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, "यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।" जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए।"

प्रेरितों के काम 16 में पौलुस और सीलास बन्दीगृह में हैं। वहां वे क्या कर रहे थे? भजन गा रहे थे? तभी भूकम्प के कारण अव्यवस्था हो गई। प्रेरितों के काम 16:25–26, "आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और क़ैदी उनकी सुन रहे थे। इतने में एकाएक बड़ा भूकम्प आया, यहां तक कि बन्दीगृह की नींव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल पड़े।"

भजन गाने का अर्थ है कि हम परमेश्वर की महिमा का हर्षनांद करते हैं और पृथ्वी तथा आकाश उसकी महानता का वर्णन करते हैं। आराधना में हम एक समुदाय रूप में यही करते हैं।

स्पष्टता कलीसिया की आराधना में प्रकाशन और प्रतिक्रिया होती है। परमेश्वर स्वयं को प्रकट करता है और हम प्रतिक्रिया दिखाते हैं। यही आराधना है। संपूर्ण धर्मशास्त्र में यह प्रकट है। परमेश्वर का प्रकाशन संसार में स्पष्ट दिखाई देता है। भजन 19:1–4, "आकाश परमेश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है। न तो कोई बोली है और न कोई भाषा जहां उनका शब्द सुनाई नहीं देता है। उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज गया है, और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं। उन में उस ने सूर्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है।"

वह संसार में व्यापक रूप से प्रकट है। अतः उसका वचन उसका प्रकाशन है। अतः उसका प्रकाशन कलीसिया में शिक्षा देने में ही नहीं है, भजन गाने और प्रार्थना करने में भी उसका प्रकाशन है। वचन मुख्य भाग है। उसका प्रकाशन केन्द में रहता है। क्यों? क्योंकि उसका वचन परिपूर्ण एवं सिद्ध है। भजन 19:7–11, "यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं; यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखों में ज्योति ले आती है; यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं। वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और टपकनेवाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं। उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है; उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है।"

वचन परिपूर्ण है, वचन प्रमाणिक है। वह हमें बुद्धिमान बनाता है। वचन भला है। वचन स्पष्ट है। वचन अनन्त है। वह सदाकालीन है। वचन सच्चा है।

यह परमेश्वर का प्रकाशन है। हम प्रतिक्रिया कैसे दिखाते हैं? वचन हमें बदल देता है। भजन 19:7–11 में यही लिखा है। वचन हमें बुद्धिमान बनाता है। वचन हमें सन्तोष प्रदान करता है। वचन हमें ज्योतिर्मय करता है। वचन हम में श्रृद्धा उत्पन्न करता है। वचन परमेश्वर की भक्ति लाता है। यहां नहेम्याह 8 विशेष करके यही कहता है। वचन हमें धर्मी बनाता है। यह महत्वपूर्ण है। वचन आराधना का कार्य करता है।

परमेश्वर का वचन आराधना की प्रेरणा देता है। जब वचन हमारी आराधना में न हो तो हमारी प्रतिक्रिया स्वाभाविक नहीं होती है। हम किसे प्रतिक्रिया दिखाते हैं? गाना–बजाना, मधुर शब्द और प्रभावी वक्ता को? यह सब नकली है और सन्तोषदायक है परन्तु परमेश्वर के प्रकाशन के बिना हम किसकी आराधना करते हैं? अपने आप की। आराधना में वचन की उपस्थिति के द्वारा हमारी प्रतिक्रिया सच्ची होती है। हम परमेश्वर के सत्य के प्रति आस्था प्रकट करते हैं और परमेश्वर प्रसन्न होता है।

कलीसिया की आराधना में अगली मान्यता है, सत्यनिष्ठा। कलीसिया की आराधना में परमेश्वर और एक दूसरे के प्रति सत्यनिष्ठा की आवश्यकता है। यूहन्ना 4 में सामरी स्त्री प्रभु यीशु से अपना जीवन छिपाना चाहती थी परन्तु प्रभु यीशु उसके जीवन को ही संबोधित करता है।

यूहन्ना 4:21–24, "यीशु ने उससे कहा, "हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में। तुम जिसे नहीं जानते, उसकी आराधना करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।"

परमेश्वर के सत्यनिष्ठा बिना आराधना संभव नहीं है। यीशु उससे कहता है कि वह अपने पति को लेकर आए परन्तु वह कहती है कि उसका पति नहीं है। यीशु ने उसके जीवन की वास्तविकता प्रकट की कि उसके पांच पति रह चुके हैं और जिसके साथ वह रह रही थी वह भी उसका पति नहीं था। यीशु सीधी बात करता था। इस संपूर्ण पुस्तक में हम देखते हैं कि मनुष्य परमेश्वर के साथ सत्यनिष्ठा निभाए बिना, पाप का अंगीकार किए बिना आराधना करता है। यह परिदृश्य तो आरंभ ही से है– उत्पत्ति अध्याय 3 से जब पाप ने प्रवेश किया।

उत्पत्ति 3:6–13, "अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिये अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहनेयोग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। तब उन दोनों की आंखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय

वाटिका में फिरता था, का शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, "तू कहां है?" उसने कहा, "मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया, क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया।" उसने कहा, "किसने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे मना किया था, क्या तू ने उसका फल खाया है?" आदम ने कहा, "जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।" तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, "तू ने यह क्या किया है?" स्त्री ने कहा, "सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैं ने खाया।"

मलाकी अध्याय 1 और 2 में परमेश्वर कहता है, मैं तुम्हारे मुंह पर गोबर लगा दूंगा क्योंकि वे आराधना तो करते थे परन्तु पाप के विषय कुछ नहीं करते थे। क्या हमारे साथ भी ऐसा ही है? हम एकत्र होकर आराधना में सहभागी होते हैं परन्तु अपने जीवन में पाप से संघर्ष के लिए कुछ नहीं करते हैं।

मलाकी 1:6–14, "पुत्र पिता का, और दास स्वामी का आदर करता है। यदि मैं पिता हूं, तो मेरा आदर मानना कहां है? और यदि मैं स्वामी हूं, तो मेरा भय मानना कहां? सेनाओं का यहोवा, तुम याजकों से भी जो मेरे नाम का अपमान करते हो यही बात पूछता है। परन्तु तुम पूछते हो, 'हम ने किस बात में तेरे नाम का अपमान किया है?' तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाते हो। तौभी तुम पूछते हो, 'हम किस बात में तुझे अशुद्ध ठहराते हैं?' इस बात में भी कि तुम कहते हो, 'यहोवा की मेज तुच्छ है।' जब तुम अन्धे पशु को बलि करने के लिये समीप ले आते हो तो क्या यह बुरा नहीं? जब तुम लंगड़े या रोगी पशु को ले आते हो, तो क्या यह बुरा नहीं? अपने हाकिम के पास ऐसी भेंट ले आओ; क्या वह तुम से प्रसन्न होगा या तुम पर अनुग्रह करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। "अब मैं तुम से कहता हूं, ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह हम लोगों पर अनुग्रह करे। यह तुम्हारे हाथ से हुआ है; तब क्या तुम समझते हो कि परमेश्वर तुम में से किसी का पक्ष करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। भला होता कि तुम में से कोई मन्दिर के किवाड़ों को बन्द करता कि तुम मेरी वेदी पर व्यर्थ आग जलाने न पाते! सेनाओं के यहोवा का यह वचन है, मैं तुम से कदापि प्रसन्न नहीं हूं, और न तुम्हारे हाथ से भेंट ग्रहण करूंगा। क्योंकि उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक अन्यजातियों में मेरा नाम महान् है, और हर कहीं मेरे नाम पर धूप और शुद्ध भेंट चढ़ाई जाती है; क्योंकि अन्यजातियों में मेरा नाम महान् है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। परन्तु तुम लोग उसको यह कहकर अपवित्र ठहराते हो कि यहोवा की मेज़ अशुद्ध है, और जो भोजनवस्तु उस पर से मिलती है वह भी तुच्छ है। फिर तुम यह भी कहते हो, कि यह कैसा बड़ा उपद्रव है! सेनाओं के यहोवा का यह वचन है। तुम ने उस भोजनवस्तु के प्रति नाक–भौं सिकोड़ी, और अत्याचार से प्राप्त किए हुए और

लंगड़े और रोगी पशु की भेंट ले आते हो! क्या मैं ऐसी भेंट तुम्हारे हाथ से ग्रहण करूं? यहोवा का यही वचन है। जिस छली के झुण्ड में नर पशु हो परन्तु वह मन्नत मानकर परमेश्वर को वर्जित पशु चढ़ाए, वह शापित है; मैं तो महाराजा हूं, और मेरा नाम जाति–जाति में भययोग्य है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"

मलाकी 2:1–3, ""अब हे याजको, यह आज्ञा तुम्हारे लिये है। यदि तुम इसे न सुनो, और मन लगाकर मेरे नाम का आदर न करो, तो सेनाओं का यहोवा यों कहता है कि मैं तुम को शाप दूंगा, और जो वस्तुएं मेरी आशीष से तुम्हें मिलीं हैं, उन पर मेरा शाप पड़ेगा, वरन् तुम जो मन नहीं लगाते हो इस कारण मेरा शाप उन पर पड़ चुका है। देखो, मैं तुम्हारे कारण बीज को झिड़कूंगा, और तुम्हारे मुंह पर तुम्हारे पर्वों के यज्ञपशुओं का मल फैलाऊंगा, और उसके संग तुम भी उठाकर फेंक दिए जाओगे।"

प्रभु यीशु हमारे पाप को हर लेना चाहता है। पाप को प्रकट करना आवश्यक है क्योंकि वह हमारे पापों के लिए मर गया था। यीशु हमारे दुःखों में हमें शान्ति प्रदान करना चाहता है। इस स्त्री के जीवन में दुःख थे और मुख्य बात है उन्हें प्रभु के समक्ष लाएं, छिपाएं नहीं। कभी कभी आराधना में हम कहते हैं अपनी चिन्ताओं को छोड़कर आराधना में आओ। नहीं, हमें चिन्ताएं और दुःख, संकट सब आराधना में लाने हैं। परमेश्वर उन्हें दूर करने में सामर्थी है। अतः परमेश्वर के साथ सत्यनिष्ठा निभाएं।

यीशु ने उससे यह भी कहा कि परमेश्वर की आराधना किसी स्थान में सीमित नहीं हो सकती है। यूहन्ना 2 और मत्ती 12 में यहूदियों और सामरियों के मध्य विवाद व्यक्त किया गया है कि आराधना का स्थान यरूशलेम हो या गिरीज्ज़ीम पर्वत। यीशु यहां स्पष्ट कहता है कि हम बाहरी परिस्थितियों के कारण आराधना को अर्थरहित कर देते हैं। वह आराधना को आत्मा संबन्धित बताता है। आराधना में स्थान नहीं उसकी उपस्थिति का महत्व होता है। यूहन्ना 2 में वह कहता है, "मन्दिर मैं हूं।" मत्ती 12 में वह कहता है कि मन्दिर से भी बड़ा कोई यहां है।

अतः आराधना हमारे मन की प्रतिक्रिया है जो उसकी उपस्थिति के प्रति प्रकट होती है। मत्ती 15:8, "'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है।"

इफिसियों 5:18–19, "दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने–अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।"

आपके मन की गहराई से आराधना उभरती है जो बाहरी परिस्थिति के परे होती है। यदि हम मन की प्रतिक्रिया और मसीह की उपस्थिति के सत्य से अलग आराधना करते हैं तो हमारी आराधना की साजसज्जा व्यर्थ है। यूहन्ना 4 में प्रभु यीशु स्पष्ट कहता है कि हम अनजान परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकते। यीशु कहता है कि वचन से विलग हमारी आराधना व्यर्थ है।

अतः अपनी कलीसियाई आराधना में दीनता, समुदायिकता, स्पष्टता, सत्यनिष्ठा तथा विविधता होती है। कलीसिया की आराधना में स्वर्ग की एकता और अनेकता प्रकट होती है।

प्रकाशितवाक्य 7:9–17 में इसका वृहत्त परिदृश्य है।

"इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है, और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, "उद्धार के लिये हमारे परमेश्वर का, जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय–जय कार हो!" और सारे स्वर्गदूत उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं; फिर वे सिंहासन के सामने मुंह के बल गिर पड़े और परमेश्वर को दण्डवत् करके कहा, "आमीन! हमारे परमेश्वर की स्तुति और महिमा और ज्ञान और धन्यवाद और आदर और सामर्थ और शक्ति युगानुयुग बनी रहें। आमीन!" इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, "ये श्वेत वस्त्र पहिने हुए कौन हैं? और कहां से आए हैं?" मैं ने उससे कहा, "हे स्वामी, तू ही जानता है।" उसने मुझ से कहा, "ये वे हैं, जो उस महाक्लेश में से निकलकर आए हैं; इन्होंने अपने–अपने वस्त्र मेम्ने के लहू में धोकर श्वेत किए हैं। इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं, और उसके मन्दिर में दिन–रात उसकी सेवा करते हैं, और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उनके ऊपर अपना तम्बू तानेगा। वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे; और न उन पर धूप, न कोई तपन पड़ेगी। क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है उनकी रखवाली करेगा, और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा; और परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा।"

सब कुछ इसी ओर अग्रसर है। अतः हम शीघ्रता से देखेंगे। एक, हमें आराधना का वैश्विक परिदृश्य देखना है। हम एक वृहत्त परिदृश्य के भाग हैं। दूसरा, हमें विश्वासियों को विभाजित करनेवाली विविध आराधना विधियों पर जय पाना है परन्तु आराधना की विविधता अच्छी भी है। आप अपनी आराधना विधि लेकर एशिया की आवासीय कलीसिया में नहीं बैठ पाएंगे। प्रभु यीशु ने सबके लिए अपनी जान दी है, सब जातियों, भाषाओं और कुलों के लिए।

हमें विश्वव्यापी आराधना के आनन्द में सहभागी होना है। हमें समझना है कि हमारे भाई बहन कहीं कहीं हमसे पहले आराधना में हैं। हमें परमेश्वर के प्रेम में खो जाना है क्योंकि वह हर एक मनुष्य से प्रेम करता है। चाहे वह किसी भी भाषा का हो या किसी भी जाति का हो। हमें उस वैश्विक मिशन कार्य में लग जाना है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है क्योंकि आराधना का उद्देश्य यही है कि हम सब जातियो में परमेश्वर की महिमा प्रकट करें। अतः कलीसिया आराधना करती है।

कलीसिया प्रार्थना करती है

कलीसिया का काम है सुसमाचार प्रचार करना, बपतिस्मा देना, शिक्षा देना, पोषण करना, आराधना करना और प्रार्थना करना। प्रेरितों के काम की पुस्तक में तीन बार कहा गया है कि वे प्रार्थना में लौलीन रहते थे।

प्रेरितों के काम 1:14, "ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे।"

प्रेरितों के काम 2:42, "और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।"

प्रेरितों के काम 6:4, "परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।"

प्रेरितों के काम की पुस्तक अध्याय 4 में कलीसिया की सामूहिक प्रार्थना है। पतरस और यूहन्ना ने जब कलीसिया को बताया कि महायाजक और पुरनियों ने उन्हें क्या चेतावनी दी तब उन्होंने प्रार्थना की। प्रेरितों के काम 4:23–31, "वे छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ प्रधान याजकों और पुरनियों ने उनसे कहा था, उनको सुना दिया। यह सुनकर, उन्होंने एक चित्त होकर ऊंचे शब्द से परमेश्वर से कहा, "हे

स्वामी, तू वही है जिसने सवर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया। तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, 'अन्य जातियों ने हुल्लड़ क्यों मचाया? और देश देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ बातें सोचीं? प्रभु और उसके मसीह के विरोध में पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम एक साथ इकट्ठे हो गए।' क्योंकि सचमुच तेरे सेवक यीशु के विरोध में, जिसका तू ने अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी अन्य जातियों और इस्राएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए, कि जो कुछ पहले से तेरी सामर्थ्य और मति से ठहरा था वही करें। अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं। चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्‌भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएं।" जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।"

कलीसिया किससे प्रार्थना करती थी?

वे जगत में सब पर प्रभुता करनेवाले परमेश्वर से प्रार्थना करते थे। प्रेरितों के काम अध्याय 4 में उनकी प्रार्थना का आरंभ सताव के मध्य हुआ था। जब आप जानते हैं कि आपके सतानेवाले भी परमप्रधान परमेश्वर के हाथ में हैं तब परमप्रधान परमेश्वर से प्रार्थना करना अच्छा होता है। परमेश्वर की प्रभुता से हटकर वे आपको कोई हानि नहीं पहुंचा सकते हैं। यह प्रार्थना में विश्वास है। परमेश्वर ही है जो मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित करता है और उनके मन के द्वारा खोल देता है।

प्रेरितों के काम 16:14, "लुदिया नाम थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला कि वह पौलुस की बातों पर चित्त लगाए।"

प्रेरितों के काम 18:9–11, "प्रभु ने एक रात को दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, "मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह; क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।" इसलिये वह उनमें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा।"

कलीसिया हमारी प्रत्येक आवश्यकता को पूरा करनेवाले परमेश्वर से प्रार्थना करती है। आरंभिक कलीसिया जानती थी कि परमेश्वर का समार्थ्य परमेश्वर की सेवा में नहीं, उसके द्वारा सेवा पाने में है। हम उससे आवश्यकतापूर्ति की आशा करते हैं। वह हमसे कुछ नहीं चाहता है।

प्रेरितों के काम 17:25, "न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।"

कलीसिया प्रार्थना क्यों करती थी?

क्योंकि वे पूर्णतः परमेश्वर के सामर्थ्य पर निर्भर थे। निम्न प्रत्येक पद में आप देखेंगे कि प्रेरितों के काम में प्रत्येक नया कार्य प्रार्थना का परिणाम था। वे पूर्णतः परमेश्वर के सामर्थ्य पर निर्भर थे।

प्रेरितों के काम 3:1, "पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।"

प्रेरितों के काम 4:4, "परन्तु वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पांच हजार पुरुषों के लगभग हो गई।"

प्रेरितों के काम 4:29, "अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं।"

प्रेरितों के काम 4:31, "जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।"

प्रेरितों के काम 6:3–4, "इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।"

प्रेरितों के काम 6:7, "परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत को माननेवाला हो गया।"

प्रेरितों के काम 7:59–60, "वे स्तिफनुस को पथराव करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।" फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।" और यह कहकर सो गया।"

प्रेरितों के काम 8:1–4, "शाऊल उसके वध में सहमत था। उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव आरम्भ हुआ और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर–बितर हो गए। कुछ भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा और उसके लिये बड़ा विलाप किया। शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर–घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट–घसीटकर बन्दीगृह में डालता था। जो तितर–बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।"

प्रेरितों के काम 9:13, "हनन्याह ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराईयां की हैं।"

प्रेरितों के काम 9:18, "और तुरन्त उसकी आंखों से छिलके–से गिरे और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया।"

प्रेरितों के काम 10:9, "दूसरे दिन जब वे चलते चलते नगर के पास पहुंचे, तो दोपहर के निकट पतरस छत पर प्रार्थना करने चढ़ा।"

प्रेरितों के काम 10:47–48, "क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?" और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि कुछ दिन हमारे साथ रह।"

प्रेरितों के काम 16:25, "आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और क़ैदी उनकी सुन रहे थे।"

प्रेरितों के काम 16:33, "रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।"

प्रेरितों के काम 18:27, "जब उसने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें; और उसने वहां पहुंचकर वहां उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था।"

प्रेरितों के काम 20:24, "परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूं, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा को पूरी करूं, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।"

प्रेरितों के काम 20:32, "और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए गए लोगों में साझी करके मीरास दे सकता है।"

प्रेरितों के काम 3:1, "पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।"

वे पूर्णतः परमेश्वर के अनुग्रह के खोजी थे। प्रेरितों के काम 4:33 में लिखा है कि उन पर परमेश्वर का महान अनुग्रह था। उनके माध्यम से परमेश्वर का सामर्थ्य और अनुग्रह क्रियाशील था।

प्रेरितों के काम 6:8, "स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े–बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।"

प्रेरितों के काम 11:23, "वह वहां पहुंचकर और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ, और सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो।"

प्रेरितों के काम 13:43, "जब सभा उठ गई तो यहूदियों और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुत से पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए; और उन्होंने उनसे बातें करके समझाया कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो।"

प्रेरितों के काम 14:3, "वे बहुत दिन तक वहां रहे, और प्रभु के भरोसे पर हियाव से बातें करते थे; और वह उनके हाथों से चिन्ह और अद्‌भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था।"

प्रेरितों के काम 14:26, "और वहां से वे जहाज से अन्ताकिया में गए, जहां से वे उस काम के लिये जो उन्होंने पूरा किया था परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपे गए थे।"

प्रेरितों के काम 15:11, "हां, हमारा यह निश्चय है कि जिस रीति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएंगे; उसी रीति से हम भी पाएंगे।"

वे परमेश्वर के मिशन कार्य में पूर्णतः समर्पित थे। अतः सामर्थ्य और अनुग्रह की आवश्यकता थी जिसके लिए वे प्रार्थना करते थे। हम हर एक कार्य अपनी क्षमता में कर सकते हैं परन्तु हमें सुसमाचार प्रचार के लिए प्रार्थना की आवश्यकता है।

एशिया की आवासीय कलीसियाओं में एक संकट है कि कभी भी अधिकारी वहां धावा बोलकर उन्हें पकड़ सकते हैं। अतः मैं ने पूछा, "हमें क्या करना चाहिए?" उन्होंने आश्चर्य से देखकर कहा, "हमें प्रार्थना करना चाहिए।" यह एक अति उत्तम योजना है।

कलीसिया प्रार्थना कैसे करती थी?

वे एक निश्चित रूप में प्रार्थना करते थे। वे मन से निकलनेवाली प्रार्थना करते थे। परमेश्वर का आत्मा उनकी अगुआई करता था। इस पर हम आगे चलकर ध्यान देंगे।

कलीसिया कब प्रार्थना करती थी?

वे ध्यानमग्न प्रार्थना करते थे। हम उन्हें प्रार्थना में एक चित्त देखते हैं परन्तु वे वहां से निकल कर भी प्रार्थना में ही रहते थे।

कलीसिया कहां प्रार्थना करती थी?

वे प्रार्थना के लिए एकत्र होते थे। प्रेरितों के काम 1:14 और 13 में जब उन्होंने पौलुस और बरनबास को प्रचार के लिए भेजा तब एक साथ प्रार्थना की थी।

प्रेरितों के काम 13:1–3, "अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; जैसेः बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम, और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है।" तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।"

हम देखते है कि उनकी प्रार्थना के प्रभाव के कारण पौलुस और बरनबास ने कलीसियाएं स्थापित करना आरंभ कर दी थीं। नये नियम की 24 पुस्तकों में से 13 पुस्तकें इस प्रार्थना सभा का परिणाम हैं।

वे विसर्जित होकर प्रार्थना करते थे। प्रेरितों के काम 16, 18, 20 में पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन दर्शाया गया है।

प्रेरितों के काम 16:6–8, "वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। उन्होंने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। अतः वे मूसिया से होकर वे त्रोआस में आए।"

प्रेरितों के काम 18:9–11, "प्रभु ने एक रात को दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, "मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह; क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।" इसलिये वह उनमें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा।"

प्रेरितों के काम 20:22, "अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता कि वहां मुझ पर क्या क्या–क्या बीतेगा।"

कलीसिया किस विषय पर प्रार्थना करती थी?

कलीसिया की गतिविधियां और शिक्षा के लिए तथा परमेश्वर के वचन की सफलता के लिए। प्रेरितों के काम 14 में उनकी प्रार्थना है कि परमेश्वर अपने सेवकों को साहस से प्रचार करने की क्षमता प्रदान करे। प्रेरितों के काम 12 में वे परमेश्वर के वचन के प्रसारण के लिए प्रार्थना करते हैं।

वे संसार में एक दूसरे की आवश्यकताओं के लिए भी प्रार्थना करते हैं। वे हर एक के लिए विशेष प्रार्थना करते थे। उन्होंने पतरस के लिए और परमेश्वर की आराधना के विस्तार के लिए प्रार्थना की। प्रेरितों के काम की पुस्तक में कलीसिया के विकास के 36 संदर्भ हैं जिनमें से 26 प्रार्थनाओं का फल हैं। प्रार्थना के फलस्वरूप कलीसिया का, परमेश्वर की आराधना का विकास हो रहा था। भजन 2:8 में लिखा है, "मुझ से मांग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिये, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिये दे दूंगा।"

और हबक्कूक 2:14 में, "क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है।"

प्रेरितों के काम 2:42 में एक अति उत्तम बात लिखी है, "और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।"

जब हम परमेश्वर द्वारा व्यक्त महत्वपूर्ण बात को करते हैं तब कलीसिया बढ़ती है।

प्रेरितों के काम 2:47, "और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थेः और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।"

प्रेरितों के काम 4:4, "परन्तु वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पांच हजार पुरुषों के लगभग हो गई।"

प्रेरितों के काम 5:14, "विश्वास करनेवाले बहुत से पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।"

प्रेरितों के काम 6:1, "उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानी भाषा पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती।"

प्रेरितों के काम 6:7, "परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत को माननेवाला हो गया।"

प्रेरितों के काम 9:31, "इस प्रकार सारे यहूदिया, और गलील, और समरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई।"

प्रेरितों के काम 11:24, "वह एक भला मनुष्य था, और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था; और और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले।"

प्रेरितों के काम 12:24, "परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।"

प्रेरितों के काम 16:5, "इस प्रकार कलीसियाएं विश्वास में स्थिर होती गईं और संख्या में प्रतिदिन बढ़ती गईं।"

प्रेरितों के काम 19:20, "इस प्रकार प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता और प्रबल होता गया।"

प्रेरितों के काम 28:30–31, "वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा, और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक–टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।"

एकता और विकास

हम बपतिस्मा देते हैं, परमेश्वर के वचन की शिक्षा देते हैं, एक दूसरे का पोषण करते हैं और एक साथ आराधना करते हैं, एक साथ प्रार्थना करते हैं। परमेश्वर आशिष देता है जो अलग अलग समय पर अलग अलग रूप में होती है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम कलीसिया का विकास देखते हैं। यहां मुझे एक बात बड़ी मनभावन लगती है– कलीसिया एक होकर बढ़ रही है। हम दोनों ओर शिकायत करते हैं। हमारी कलीसिया अपनों ही में मग्न है, बाहर नहीं निकलती है या हमारी कलीसिया बाहर ही ध्यान देती है, एक दूसरे पर ध्यान नहीं देती है।

कलीसिया सुसमाचार प्रसारण से अलग नहीं है। कलीसिया का विकास सुसमाचार प्रचार को बढ़ाता है। बाइबल आधारित सुसमाचार प्रचार कलीसिया से अलग नहीं है। शिष्य निर्माण तब होता है जब प्रचार और

कलीसिया आपस में जुड़ते हैं। फ्रांसिस शोफर का कहना था, "संसार हमारी एकता से आंकता है कि हमारा सन्देश सच्चा है या नहीं– मसीही समुदाय सुसमाचार का रक्षक है।" कलीसिया में सुसमाचार ही कठोर से कठोर मन को पिघलाएगा न कि थियोलॉजी पर वाद–विवाद।

संख्या में वृद्धि और गुणों में वृद्धि

लूका कलीसिया के विस्तार का तो वर्णन करता है परन्तु साथ ही वह स्तिफनुस, पतरस और पौलुस को भी प्रकाश में लाता है जो सुसमाचार प्रचार के लिए जान की जोखिम उठाते हैं।

प्रेरितों के काम 11:21, "प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे।"

प्रेरितों के काम 11:24, "वह एक भला मनुष्य था, और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था; और और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले।"

प्रेरितों के काम 11:26, "जब वह उससे मिला तो उसे अन्ताकिया में लाया; और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे; और चेले सब से पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।"

प्रेरितों के काम 14:1, "इकुनियुम में ऐसा हुआ कि वे यहूदियों के आराधनालय में साथ साथ गए, और इस प्रकार बातें कीं कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहतों ने विश्वास किया।"

प्रेरितों के काम 14:21 "वे उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाकर, और बहुत से चेले बनाकर, लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए।"

प्रेरितों के काम 16:5, "इस प्रकार कलीसियाएं विश्वास में स्थिर होती गईं और संख्या में प्रतिदिन बढ़ती गईं।"

प्रेरितों के काम 17:4, "उनमें से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतों ने और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए।"

प्रेरितों के काम 17:12, "इसलिये उनमें से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से और पुरुषों में से भी बहुतों ने विश्वास किया।"

प्रेरितों के काम 19:26, "तुम देखते और सुनते हो कि केवल इफिसुस ही में नहीं, वरन् प्रायः सारे आसिया में यह कह कहकर इस पौलुस ने बहुत लोगों को समझाया और भरमाया भी है, कि जो हाथ की कारीगरी हैं, वे ईश्वर नहीं।"

कलीसिया से एक प्रश्न पूछा जाता है, कितने लोग आते हैं? यह प्रश्न अच्छा है परन्तु महत्वपूर्ण प्रश्न तो यह है। "हम कैसे लोग तैयार कर रहे हैं?"

आराधना और गवाही

वे आराधना में एकजुट थे और गवाही द्वारा बढ़ते थे।

प्रेरितों के काम 5:21, "वे यह सुनकर भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपदेश देने लगे।"

यदि हमारी आराधना का प्रभाव संसार पर न हो तो वह खोखली है। आराधना मिशन कार्य की उर्जा है। हम मसीह की महिमा को निहारते हैं और सुसमाचार सुनाते हैं।

प्रेरितों के काम 13:1–4, "अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; जैसेः बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम, और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है।" तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया। अतः वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहां से जहाज पर चढ़कर साइप्रस को चले।"

इकट्ठा होना तितर–बितर होना

हम देखते हैं कि कलीसिया घनिष्ठता के लिए इकट्ठा होती है और आत्मा उन्हें दूर दूर ले जाता है। फिलिप्पुस कूशी खोजे के साथ सुसमाचार बांटने रेगिस्तान में गया था। प्रेरितों के काम 18 में वे तितर–बितर होते हैं।

यहां हमें अति सावधान रहना है अन्य कलीसिया अगुओं को पेशेवर कार्यकर्ता और सदस्यों को अपरिपक्व दर्शक समझने लगेगी। हमें ध्यान रखना है कि हम आराधना में यह न सोचें कि संगीत तो अच्छा था परन्तु प्रचार अच्छा नहीं था। प्रत्येक आराधक में पवित्र आत्मा का अन्तर्वास है। अतः कलीसिया का प्रचार भवन में एकत्र होना नहीं भवन से बाहर जाना है। हमें अपने परिवेश में सुसमाचार सुनाना है।

एक और भ्रम यह है कि हम सफलता को भवन के भीतर देखना चाहते हैं जबकि सच यह है कि सफलता बाहर सुसमाचार प्रचार से मिलती है।

बाइबल आधारित सत्यः कलीसिया एक दूसरे के प्रशिक्षण हेतु एकत्र होती है– प्रार्थना करना, वचन सुनना, प्रभु भोज में रोटी तोड़ना, प्रोत्साहन, प्रेम, परस्पर आत्मत्याग आदि। तदोपरान्त हम सुसमाचार लेकर संसार में निकलते हैं।

स्थानीय और वैश्विक

वहां सुसमाचार यरूशलेम से यहूदा, सामरिया और पृथ्वी की छोर तक गया था।

प्रेरितों के काम 1:8, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

प्रेरितों के काम 8:1–4, "शाऊल उसके वध में सहमत था। उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव आरम्भ हुआ और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर–बितर हो गए। कुछ भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा और उसके लिये बड़ा विलाप किया। शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर–घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट–घसीटकर बन्दीगृह में डालता था। जो तितर–बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।"

एक हानिकारक विचारः दो बातें प्रायः सुनने को मिलती हैं। एक, "मझे विदेश सेवा की बुलाहट नहीं है।" प्रचार कार्य कुछ लोगों का नहीं, हम सब की बुलाहट है। हमारी सृष्टि का उद्देश्य यही है कि पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार सुनाएं। यह बुलाहट का प्रश्न नहीं है हमारी सांस चलने का उद्देश्य है। इसी कारण हमारा उद्धार हुआ है कि हम सुसमाचार को पृथ्वी की छोर तक पहुंचाएं।

भजन 96:1–3, "यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, हे सारी पृथ्वी के लोगो, यहोवा के लिये गाओ! यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभसमाचार सुनाते रहो। अन्य जातियों में उसकी महिमा का, और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।"

भजन 67:1–2, "परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे, और हम को आशीष दे; वह हम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, जिससे तेरी गति पृथ्वी पर, और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों में जाना जाए।"

पौलुस अपने उद्धार को सब जातियों में प्रचार करने का कारण बताता है।

रोमियों 1:14–15, "मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का, और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूं। अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं।"

मत्ती 28:19–20 की महान आज्ञा है, "इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।"

गलातियों 1:15–16, "परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं, तो न मैं ने मांस और लहू से सलाह ली।"

हम कहते हैं प्रचार करने से अच्छा क्या दान देना नहीं है? बहुत अच्छा है परन्तु दान अकेला ही सुसमाचार नहीं है। परमेश्वर ने हमारे उद्धार के लिए पैसा नहीं, अपना पुत्र भेजा था। अतः दान और प्रचार सुसमाचार प्रचार का माध्यम है।

प्रभावी विकल्प– संसार का प्रभाव डालनेवाले शिष्य। पौलुस, पतरस, तीमुथियुस, बरनबास, सीलास, यूहन्ना, मरकुस, फिलिप्पुस, स्तिफनुस, अक्वीला, प्रिसिकिल्ला, ऐसे विश्वासी कलीसिया में हों तो क्या होगा? कलीसिया में संसार पर प्रभाव डालनेवाले शिष्य होंगे और कलीसिया बढ़ती ही जाएगी। क्यूबा के सताव की चर्चा मैं पहले कर चुका हूं। वहां एक छोटी सी कलीसिया ने 60 कलीसियाएं स्थापित कर दी हैं। इनमें से एक कलीसिया में हम गए उस कलीसिया ने भी 25 अन्य कलीसियाएं बना दी हैं। मैं ने वहां के एक वरिष्ठ पास्टर से पूछा कि वे कैसे इतनी कलीसियाएं बना पाते हैं तो उनका उत्तर था, "हम शिष्य बनाते हैं।" अतः लिख लें कि हमें शिष्य बनाने हैं।

कलीसिया गतिविधियों का अध्ययन

अन्ताकिया की कलीसियाः उनकी कहानी अविश्वसनीय है कि वे कैसे बढ़े।

प्रेरितों के काम 11:19–26, "जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर–बितर हो गए थे, वे फिरते–फिरते फीनीके और साइप्रस और अन्ताकिया में पहुंचे; परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे। परन्तु उनमें से कुछ साइप्रसवासी और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे। प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे। जब उनकी चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के सुनने में आई, और उन्होंने बरनबास को अन्ताकिया भेजा। वह वहां पहुंचकर और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ, और सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो। वह एक भला मनुष्य था, और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था; और और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले। तब वह शाऊल को ढूंढ़ने के लिये तरसुस को चला गया। जब वह उससे मिला तो उसे अन्ताकिया में लाया; और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे; और चेले सब से पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।"

इस कलीसिया की स्थापना स्तिफनुस के पथरवाह से हुई थी और प्रेरितों के काम 8 में विश्वासी तितर बितर हुए थे।

प्रेरितों के काम 8:1–4, "शाऊल उसके वध में सहमत था। उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव आरम्भ हुआ और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर–बितर हो गए। कुछ भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा और उसके लिये बड़ा विलाप किया। शाऊल कलीसिया को

उजाड़ रहा था; और घर–घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट–घसीटकर बन्दीगृह में डालता था। जो तितर–बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।"

कुछ विश्वासी अन्ताकिया पहुंचे और वहां कलीसिया की स्थापना हुई– मसीही शहीदों के परिणामस्वरूप।

वे मसीह यीशु के साथ आमूल पहचान रखते थे। अन्ताकिया में ही विश्वासियों को मसीही कहा गया था। वहां किसी को सन्देह नहीं था कि उसे बपतिस्मा लेना है या नहीं।

वे सब कलीसियाओं के लिए आत्मत्याग करते थे।

इस प्रकार वे संसार में सुसमाचार प्रचार कर रहे थे। उनके प्रचार के साथ दूसरों की सुधि लेना भी था।

उनकी अगुआई में अलग अलग सेवाएं थीं। प्रेरितों के काम 13:1–3, "अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; जैसेः बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम, और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है।" तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।"

वे सामूहिक आराधना द्वारा परमेश्वर को धन्य कहते थे। यह है आराधना के फलस्वरूप प्रचार। वे सामूहिक आराधना द्वारा परमेश्वर को धन्य कहते थे।

मार्गदर्शन और सामर्थ्य के लिए वे पवित्र आत्मा पर पूर्णतः निर्भर थे। उन्होंने पौलुस को प्रचार हेतु भेजा। प्रेरितों के काम 16:6–10। पवित्र आत्मा पौलुस को रोकता भी था। पवित्र आत्मा ही उसे मकिदुनिया जाने का दर्शन दिया था।

प्रेरितों के काम 18:9–11, "प्रभु ने एक रात को दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, "मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह; क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।" इसलिये वह उनमें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा।"

प्रेरितों के काम 20:22–24, "अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता कि वहां मुझ पर क्या क्या–क्या बीतेगा; केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार हैं। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूं, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा को पूरी करूं, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।"

वे प्रचारक भेजने का वातावरण बनाते थे।

उन्होंने सबसे अच्छे प्रचारक, पौलुस और बरनबास को भेजा। क्या हम ऐसा वातावरण बना सकते हैं और अपना सर्वोच्च दे सकते हैं?

वे बुद्धिमान होकर राज्य का विस्तार करते थे।

उन्होंने हर जगह कलीसियाएं स्थापित कीं।

अपनी विश्वव्यापी सेवा के द्वारा वे अन्ताकिया में मसीह में उन्नति कर पाए।

प्रेरितों के काम 14:26–28, "और वहां से वे जहाज से अन्ताकिया में गए, जहां से वे उस काम के लिये जो उन्होंने पूरा किया था परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपे गए थे। वहां पहुंचकर उन्होंने कलीसिया इकट्ठी की और बताया कि परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बड़े–बड़े काम किए, और अन्यजातियों के लिये विश्वास का द्वार खोल दिया। और वे चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे।"

प्रेरितों के काम 15:30–35, "फिर वे विदा होकर अन्ताकिया पहुंचे, और सभा को इकट्ठी करके वह पत्री उन्हें दे दी। वे पत्री पढ़कर उस उपदेश की बात से अति आनन्दित हुए। यहूदा और सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत बातों से भाइयों को उपदेश देकर स्थिर किया। वे कुछ दिन रहकर, भाइयों से शान्ति के साथ विदा हुए कि अपने भेजनेवालों के पास जाएं। (परन्तु सीलास को वहां रहना अच्छा लगा।) परन्तु पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में रह गएः और अन्य लोगों के साथ प्रभु के वचन का उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते रहे।"

प्रेरितों के काम 18:22–23, "और कैसरिया में उतरकर (यरूशलेम को) गया और कलीसिया को नमस्कार करके अन्ताकिया में आया। फिर कुछ दिन रहकर वहां से निकला, और एक ओर से गलातिया और फ्रूगिया प्रदेशों में सब चेलों को स्थिर करता फिरा।"

प्रचारकों को भेजने के बाद उनके लौटने पर वे एक दूसरे को प्रोत्साहित करते थे और मसीह में उन्नति करते थे। उन्होंने ऐसा कभी नहीं सोचा कि बाहर प्रचार करके हम विकास नहीं कर पाएंगे। धर्मशास्त्र में वे वृद्धि के लिए जाने गए हैं।

कलीसिया की अगुआई कैसे होती है?

कलीसिया की व्यवस्था

कलीसिया एक निकाय है, एक संस्था है। कलीसिया एक जीवित देह है जिसकी एक उचित एवं स्वस्थ रचना है। कहा जाता है कि कलीसिया की कोई स्थिर रचना नहीं है। नहीं, परमेश्वर ने उसे एक विशेष रचना प्रदान की है।

कलीसिया एक संस्थान है। संस्थान की परिभाषा है, किसी विशेष काम के निमित्त स्थापित निकाय। क्या कलीसिया एक संस्थान है? निश्चय ही है। परमेश्वर के विशेष काम के निमित्त स्थापित। इसमें सदस्य हैं जिनका प्रभु मसीह यीशु है। वही केन्द्र है। मत्ती 16 में लिखा है कि उसने कलीसिया बनाई है।

मत्ती 16:13–20, "यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया, और अपने चेलों से पूछने लगा, "लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?" उन्होंने कहा, "कुछ ता यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं, और कुछ एलिय्याह और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।" उसने उनसे कहा, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?" शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां

दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।" तब उस ने चेलों को चिताया कि किसी से न कहना कि मैं मसीह हूं।"

इफिसियों 4:14–16, "ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर–उधर घुमाए जाते हों। वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं, जिससे सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक–ठाक कार्य करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।"

कुलुस्सियों 2:19, "और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिससे सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन–पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है।"